Written by कुमार सौवीर
Sunday, 13 November 2016 11:51

: □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ : □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ : 16 □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □ □□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ :

□□□□□ □□□□□□

□□□□ : बातचीत में आवाज को अटक-भटक देने वाले, कद इत्ता बड़ा कि मानो आसमान से सलमा-सितारा नोंच लायेंगे, चाल ऐसी कि नाजनीनें शरमा जाएं, मुस्की ऐसी कि, कि, कि, खैर छोड़िये। वरना बातचीत किसी और ट्रैक पर पहुंच जाएगी। फिर तो बात शुरू हो जाएगी उनकी कंजूसी पर, उनकी नौकरी पर, उनकी मोहब्बत और इश्क पर, उनकी मुश्क पर, उस्मानी पर, जस्मानी पर, झाड़-झंझट पर, वगैरह-वगैरह। हमें इन सब पर क्या लेना-देना। है कि नहीं?

तो जनाब, आज हम बात कर रहे हैं नहाल मियां की। नहाल मियां बोले तो नहाल उद्दीन उस्मानी। अरे वही नहाल, जो बाराबंकी को भले ही नहाल नहीं कर पाये लेकिन हरद्वार से लेकर का-नी-का कुम्भ तक का कवरेज कर-करा चुके हैं। लेकिन हरद्वार से ही उन्हें भाषा के हरि के दरवाजे का दर्शन करने का मौका मिला, और नहाल उद्दीन उस्मानी हमेशा के लिए राहुल सांकृत्यायन हो गये। प्रकाण्ड पंडित। फिर क्या था, नहाल का टेम्पो हाई हो गया।

अब थोड़ा पीछे से बात की जाए। नहाल ने अंग्रेजी में एमए किया, और फिर सन-77 में उप्र सूचना विभाग में उन्हें अनुवादक के पद पर नौकरी मिल गयी। पोस्टिंग हुई हरद्वार में। सन-84 में उन्हें सूचना अधिकारी के तौर प्रोन्नति मिली और फिर कुम्भ में गजब मेहनत कर लिया उन्होंने। यह दायित्व उनके हरि-द्वार में प्रवेश द्वार की दक्षिणा अथवा उनके यज्ञोपवीत के तौर पर देख जा सकता है। जहां उन्होंने अपने प्रति सूचना विभाग जैसे सरकारी विभाग में उपेक्षा और अपमान का दंश झेला, जहां नियम तो खूब हैं, लेकिन उनका पालन करने-कराने वाले कभी व्यक्ति नहीं। किसी में साहस तक नहीं है कि इन नियमों का पालन करा सके। थोपे गये अफसर यहां दबंग और दरिंदों की तरह नोंचते-खसोटते रहते हैं, और सूचना विभाग के मूल आदिवासी उन अफसरों के हरम की बेगमों की तरह अपनी शौहर से चंद पल छीनने की जद्दोजहद में सहकर्मियों के बीच अन्तर्कलह में जुटे रहते हैं। लेकिन नहाल उन हरम-कलह से असंपृक्त रहे, लेकिन इसी हालत ने उन्हें स्वर्ग-आरोहण के मार्ग पर आगे बढ़ा दिया। सूचना विभाग की नौकरी उन्होंने मार्च-10 में हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ दी, पिण्ड छूटा।

भाषा सीखना, बोलना, लिखना, सिखाना और पढ़ाना उनके सिर पर किसी जिन्न-भूत की तरह चढ़ा रहता है। आज हालत यह है कि नहाल मियां ढाई दर्जन से ज्यादा भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित माने जाते हैं। भाषा सिखाने में पूरा जीवन खपा लिया नहाल उद्दीन उस्मानी ने। नहाल तो भाषा की डवांस टीचिंग के हिमायत करते हैं। उन्होंने इसके लिए खासी मेहनत की है, अथक। वरना मजाल है किसी की, कि कोई किसी को महज 7 दिनों में भाषा

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 13 November 2016 11:51

सखिा दे। उर्दू तो वे सर्फि चार दनिों में सखिा देते है, बशर्ते छात्र भी उतनी ही मेहनत करे। इतना ही नहीं, नहिाल का दावा है कि वे कसिी भी भाषा को तीन महीने में बखूबी और पूरी बारीकी के साथ सखिा सकते हैं। शर्त वही, कि छात्र में भी माद्दा-ख्वाहशि और दम-खम हो। नहिाल बताते है कि 16 साल तक का वक्त क्लास में खटने के बावजूद अगर कसिी में पढ़ना, सीखना, समझना और बोलने की तमीज न हो, तो यकीनन शर्म की बात है।

नहिाल उद्दीन उस्मानी इस क्षेत्र में अकेले नहीं हैं। उनकी टोली में दविेयरंजन पाठक और डॉ आरती बरनवाल भी शामलि हैं। इन तीनों ने भाषा सखिाने के कई कैम्प कि साथ भी चलाये हैं। दविे य रंजन पाठक और डॉ आरती भी भाषा पढ़ते नहीं, जीते हैं। पाठक तो प्रीलांसर शक्षिक हैं, जबकि डॉ आरती कानपुर के सेंट्रल स्कूल में शक्षिकि हैं। इन दोनों पर बाद में अलग-अलग खबरें लखिी जाएंगी। लेकनि इतना जरूर बता दें कि इन लोगों के आपस में बातचीत करते वक्त आप समझ ही नहीं पायेंगे कि वे कसि भाषा में बातचीत कर रहे हैं। जैसे अंग्रेजी, उसी तरह, उर्दू, गुजराती ही नहीं, बल्कि संस्कृत भी।

तीन बच्चे है नहिाल के। कि कसबा, कि कनदिा और कि कसदफ। सूचना वभिाग में संयुक्त नदिेशक रह चुकीं कुलश्रेष्ठ उनकी पत्नी है। लेकनि दूसरी मोहब्बत का नाम है भाषा। उन्हें हनि्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी, बांग्ला, तमलि, कन्नड, गुजराती, मराठी, अरबी, पंजाबी, स्पेनशि, फ्रेंच समेत करीब ढाई दर्जन से ज्यादा भाषाओं में महारत है। नहिाल ने अरबी जैसी नहिायत क्लष्टि भाषाओं से हनि्दी सखिाने की कि नायाब तकनीकी इजाद की है। वे अब अपने अपनी तकनीकी को वीडयिो बना कर यू-ट्यूब पर अपलोड कर चुके है, जनिकी तादात करीब ढाई हजार से ज्यादा है।